रात्रिक्लास 7/5/68 ओमशान्ति शिवबाबा याद है?

रथ ओर रथी दोनों इकट्ठे ही आते हैं। बच्चों की याद किस तरफ जाती है? पहले रथ पर पीछे रथी पर या पहले रथी पर, पीछे रथ पर? (नज़र रथ पर याद रथी की आती है) ठीक है। शिव जयन्ति या शिवरात्रि मनाते हैं। आगे तो नहीं जानते थे शिवरात्रि क्यों मनाते हैं? कब आये थे, किसमें आये थे यह ख़्याल नहीं करते। अभी आकर अपना परिचय दिया है। बच्चे जानते हैं बाबा है और बाबा पढ़ाते हैं। बाप को याद करने से पावन भी बनना है। निश्चय होता है और समझते हैं पावन बन जावेंगे तो यहां नहीं रहेंगे। जीवन मुक्ति देने वाला भी है ऊँच ते ऊँच। तो उनको याद भी करना है। आत्मा जानती है हम ऊँच ते ऊँच बनते हैं याद की यात्रा से। जितना पुरुषार्थ करेंगे सतोप्रधान बनेंगे। और कोई उपाय नहीं। आत्मा को तमोप्रधान से सतोप्रधान बनाना है। पतित को तमोप्रधान, पावन को सतोप्रधान कहेंगे। आत्मा भी सतोप्रधान थी तो शरीर भी सतोप्रधान था। अभी आत्मा भी सतोप्रधान है। आत्मा को ही पापात्मा, पुण्यात्मा कहा जाता है। अच्छे वा बुरे संस्कार आत्मा में रहते हैं। यह तो बच्चों को पक्का हो गया है। बच्चों को यह भी निश्चय हो गया है यह हमारा बहुत जन्मों का अन्तिम जन्म है। 84 जन्मों को भी मानते हैं। यह भी जानते हैं तो पावन बनने पुरुषार्थ करते हैं। उन्होंने ही 84 जन्म पूरे लिए हैं। 84 फिर से रिपीट होनी है। आत्मा को रिपीट करना है। रिपीट करते ही रहते हैं। बच्चों को समझाया गया है 84 जन्म लिये हैं। अभी वापस जाकर रिपीट करना है। तो बच्चों को नई राजधानी भी याद आवेगी। उन्हों की राजधानी जैसे थी वही फिर से स्थापन हो रही है। इसमें ज़रा भी फ़र्क नहीं रहेगा। पूछने का भी सवाल नहीं कि कैसे होगी। अनेक बार राजधानी स्थापन हुई है। सभी प्रश्न छोड़ पुरुषार्थ करना होता है याद की यात्रा की। जिससे ही सतोप्रधान पवित्र बन जावेंगे। यह भी बच्चे जानते हैं कि इस समय तक जो (बी)ता वही रिपीट होना है। आत्मा में सारा पार्ट भरा हुआ है। जो फिर सा. होता है। आत्मा में हर रिकॉर्ड भरा हुआ है, सो फिर रिपीट होता है। ड्रामा पर भी अच्छी रीत ध्यान देना है। इसमें प्रश्न पूछने की भी दरकार नहीं। जो रिकॉर्ड भरा हुआ है वह बोलना ही है। आपे ही बताता रहता हूँ। इसमें कोई फ़र्क नहीं पड़ सकता। 84 जन्म पार्ट बजाया है एक–2 ने। कल्प पहले जैसे पढ़ा था वैसे ही पढ़ाते हैं इसमें प्रश्न उठने की कोई दरकार ही नहीं। मूँझने की भी दरकार नहीं। मूल बात है पावन बनने की। कहते हैं हम पतितों को पावन बनाऊँ। पावन दुनियां में इन्हों का राज्य था। सो फिर ज़रूर होगा; इसलिए तुमको राजयोग सिखलाते हैं। बाप श्रीमत देते हैं। इसमें बड़ी रिफाइननेस है। आत्मा रिफाइन बन जाती है तो शरीर भी रिफाइन। तुम राज्य भी रिफाइन करते हो; इसलिए उनका नाम ही स्वर्ग़ हैवेन है। यह नॉलेज सभी नॉलेज से बेस्ट है और मोस्ट ईज़ी है। बाप कहते हैं मेरी मत पर चलो तो गैरन्टी करता हूँ विकर्म विनाश होंगे और यह ल.ना. भी बनेंगे। कहते भी हैं सभी कि हम ल.ना. बनेंगे। है ही सत्यनारायण की कथा। अमरकथा अमरपुरी का तुम मालिक बनते हो। तुम बच्चों को भी अभी ज्ञाननेत्र है। बाकी स्टूडेन्ट नम्बरवार पढ़ते हैं। पुरुषार्थ तो ज़रूर करते हैं; (प)रन्तु कोई कैसे, कोई कैसे हैं। सभी आत्माओं का पार्ट का रिकॉर्ड भरा हुआ है। ज़रा भी चेंज नहीं हो सकता; इसलिए बाबा कहते हैं यह भी बहुत गुह्य ज्ञान है। कुदरत है। फिर यह ज्ञान नई दुनियां में प्रायःलोप हो जाता है। तुम संस्कार ले जाते हो राजयोग की ; इसलिए तुम जितना–2 याद में रह आप समान बनाते हो उतना ऊँच जन्म। जो बच्चे जल्दी गये हैं सो कर्मातीत अवस्था में नहीं गये; क्योंकि योग में कमी थी। भल अनन्य बच्चे जाते हैं, क्यों गये, योग की कमी ड्रामा में थी। हो सकता है आत्मा में संस्कार ... है। एक तो जन्म अच्छा और फिर आत्मा में संस्कार गई तो आत्मा की एक्टिविटी ऊँच होगी। जहां भी जावेंगे प्रभाव रहता है। (त)ाकत भी रहती है ज्ञान और योग की। अभी तो बच्चे जानते हैं हमारा अभी सुखी जीवन बनता है। दुःखी (जी)वन खत्म हो जाता है। यह भी तुम बनते हो और पुरुषार्थ कर रहे हो। बग़ीचे को पानी मिलता है, तुमको भी पानी मिलता है। बाप भी देते हैं बच्चों को। बच्चे बच्चे को भी देते हैं। अक्षर भी अच्छे हैं। नज़र–2

से मिलती है; इसलिए बाबा कहते हैं आँखें बन्द नहीं करनी चाहिए। झुटका खाते हैं या अनेकों को याद करते हैं, मित्र–सम्बन्धियों आदि अनेकों को याद करते हैं। गायन है नज़र से निहाल.....यह सभी को निहाल कर देते हैं। सभी को सद्गति देते हैं। एक्टिविटी चलती है ना। जो फिर गाई जाती है। बाप बहुत प्यारा है। इनसे ऊँच कोई है नहीं। यह भी बच्चे जानते हैं बाप हमको कल्प–2 मिलता है। बेहद का सन्यास कराते हैं। और कोई करा न सके। न किसको पता है बेहद का सन्यास कैसे होता है। तुम बच्चे जानते हो शरीर छोड़ कर अपने घर जाना है। पुरानी दुनियां की वस्तु कोई भी याद न आये। मेहतन है ना। देह सहित देह के सभी सम्बन्ध को भूलना है। अपन को आत्मा समझ मुझे याद करो। यह सब्जेक्ट है तीखा। आजकल बाबा इस पर ज़ोर लगा रहे हैं। फिर बुद्धि में नाम–रूप नहीं आवेगा। बाप ही याद आवेगा। मेहनत से अवस्था को जमाना है। विचार–सागर–मंथन करना है। कोई बात समझ में न आये तो पूछ सकते हैं। बरोबर पतित–पावन सर्वशक्तिवान भी कहा जाता है। उनकी बैटरी सदैव ही चार्ज है। तुम्हारी डिसचार्ज हो जाती है। अभी बुद्धि का योग लगाने से ही बैटरी चार्ज होनी है। उठते–बैठते, खाते–पीते जैसे बाबा आशुक–माशुक का मिसाल देते हैं नेक्स्ट में आशुक–माशुक वह है, थर्ड में आशुक–माशुक होते हैं विकार के लिए। संगम पर ही सर्व की सद्गति गाई हुई है। इन बातों में मूंझने की दरकार नहीं। मनुष्य समझते हैं परम्परा से भक्ति चली आती है। बच्चे समझते हैं एक्युरेट कब से भक्ति शुरू हुई है। बाप कहते हैं इस रथ को साधारण देख कोई विरला ही निश्चय बुद्धि होते हैं। गाया जाता है ब्रह्मा द्वारा स्थापना। राजधानी एक तो नहीं स्थापन करेंगे। एक डायरैक्शन देते हैं। प्रजापिता भी गाया हुआ है। ब्राह्मण बच्चे सभी हैं एडॉप्टेड। देवताएं होते (हैं) सतयुग (में) योगबल से। वहां रावण होता ही नहीं ऐसी–2 प्वाइन्ट्स धारण करनी हैं तो समय पर सुना सको वहां रावण ही नहीं। बाप है सर्वशक्तिवान, उनसे योग लगाने से हम इस योगबल से विश्व का मालिक बनते हैं। बाहुबल से विनाश होता है। योगबल से स्थापना होती है। जिस्मानी बल और रूहानी बल में कितना फ़र्क है। वह तो जिस्मानी बल चला आ रहा है। यह योगबल अभी से ही मिलता है। यह है याद और पढ़ाई दोनों में अटेन्शन चाहिए। याद भी चाहिए। नॉलेज भी रोज़ चाहिए। प्रबन्ध भी सभी मिलती है। योगबल से तुम सारे विश्व को पवित्र बनाते हो। तो यह भोज(न) आदि क्या बड़ी बात है। मुख्य बात है पावन बनने की। जानते हो नई दुनियां सतोप्रधान थी। फिर रिपीट होगी तो ज़रूर सतोप्रधान बनना पड़े। बाबा तो सतोप्रधान बनने की युक्ति एक्युरेट और कल्प–2 बताते हैं। मुख भी चाहिए ना । गऊमुख गाया हुआ है। बरोबर गऊ भी है। इन द्वारा बहुतों को एडॉप्ट करते हैं। तो गऊ(माता) हुई ना। हंसी में कहते हैं मेने कितने एडॉप्ट किये हैं। जगत की अम्बा किसको कहेंगे? वह जिसका पिता यह आत्माओं का पिता। बाकी अम्बा चाहिए। अम्बा के पास तो बहुत ही जाते हैं। समझते ज़रा भी नहीं कि आखिरीन में अम्बा है कौन। मन्दिर (तो) बहुत बड़े–2 हैं। अम्बा–2 जो कहते (हैं) ज़रूर बेहद की अम्बा होगी। बेहद की अम्बा से बेहद की बादशाही मिलती है। फिर महाराजा–महारानी बनते (हैं)। वर्ष–2 उनसे पैसा मांगते हो। वही राज–राजेश्वरी बनती हैं। वही मम्मा है। इस समय जानते हो हम मम्मा साथ हैं। फिर ल.ना. के साथ होंगे। यहां तुमको रत्न मिलते हैं। जास्ती वैल्यु इन रत्नों की है जो (को)ई कथन कर न सके। बाप रूप भी है, ज्ञान की बरसात भी करते हैं। आधा कल्प भक्ति, अज्ञान। आधा कल्प ज्ञान। अभी सारी सृष्टि के आदि, मध्य, अंत के राज़ को तुम बच्चे जानते हो। तो कितना अच्छी रीत बच्चों को पढ़ना चाहिए। यहां सम्मुख रहकर रिफ्रेश होते हो। फील करते हो हम बाबा के गोद में बैठे (हैं)। बाबा पढ़ा रहे हैं। पाण्डव सेना का मार्शल भी है। सभी आत्माओं को साथ ले जाते हैं। यह है शिव बारात। भाईयों की बारात बाप के पिछाड़ी। अच्छा, मीठे–2 रूहानी सिकीलधे बच्चों प्रति रूहानी बाप–दादा का याद प्यार, गुडनाइट। रूहानी बच्चों को रूहनी बाप का नमस्ते।